

सुरक्षति हदि-प्रशांत क्षेत्र की ओर कदम

यह एडिटरियल 07/10/2022 को 'हदिस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "Drafting a robust security strategy for Indo-Pacific" लेख पर आधारित है। इसमें फ्रांस, भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच नए त्रिपक्षीय प्रारूप के संदर्भ में हदि-प्रशांत क्षेत्र की वर्तमान भू-राजनीतिक के बारे में चर्चा की गई है।

संदर्भ

गतशील परिवर्तन के दौर से गुजर रही दुनिया में [हदि-प्रशांत क्षेत्र](#) (Indo-Pacific region) जैसे कुछ क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक तेजी से रूप बदल रहे हैं। यह नरिविवाद है कि हदि-प्रशांत 21वीं सदी में व्यापार एवं प्रौद्योगिकी ऊष्मायन के केंद्र में है जो 'इंडो-पैसफिक' यानी हदि-प्रशांत को वैश्विक भू-राजनीतिक शब्दावली में एक प्रमुख योग के रूप में शामिल करता है।

- इसी क्रम में इस क्षेत्र की सुरक्षा एवं स्थिरता एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है और यह वषिय उभरते राजनीतिक समीकरणों पर वचार करने भर तक सीमित नहीं है। एक खुले और सुरक्षित हदि-प्रशांत की स्थापना के लिये हतिधारक देशों को एक 'सहयोगी प्रबंधन' दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

हदि-प्रशांत का क्या महत्त्व है?

- हदि-प्रशांत क्षेत्र वशिव के सर्वाधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है जिसमें चार महाद्वीप शामिल हैं: एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका।
- इस क्षेत्र की गतशीलता और जीवन शक्ति स्वयं में प्रकट है, जहाँ 60% वैश्विक आबादी और वैश्विक आर्थिक उत्पादन के 2/3 भाग के साथ यह क्षेत्र वैश्विक आर्थिक केंद्र होने की स्थिति रखता है।
- यह प्रत्यक्ष वदिशी नविश (Foreign Direct Investment- FDI) का एक वशिल स्रोत और गंतव्य क्षेत्र भी है। वशिव की कई महत्त्वपूर्ण और बड़ी आपूर्ति शृंखलाओं का हदि-प्रशांत से महत्त्वपूर्ण संबंध है।
- हदि और प्रशांत महासागर में संयुक्त रूप से समुद्री संसाधनों का वशिल भंडार मौजूद है, जिसमें ऑफशोर हाइड्रोकार्बन, मीथेन हाइड्रेट्स, समुद्री तल खनजि और दुर्लभ मृदा धातु (Rare earth metals) शामिल हैं।
 - बड़ी समुद्र तटरेखा और [वशिष्ट आर्थिक क्षेत्र](#) (Exclusive Economic Zones- EEZs) इन संसाधनों के दोहन के लिये तटवर्ती देशों को प्रतस्पर्धी क्षमता प्रदान करते हैं।
 - इसके साथ ही, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसी वशिव की कई सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ हदि-प्रशांत क्षेत्र में ही अवस्थित हैं।

हदि-प्रशांत की प्रमुख वर्तमान चुनौतियाँ

- **भू-रणनीतिक प्रतस्पर्धा का रंगमंच:** यह क्षेत्र '[क्वाड](#)' (QUAD) और [शंघाई सहयोग संगठन](#) (Shanghai Cooperation Organisation) जैसे वभिन्न बहुपक्षीय संस्थानों के बीच भू-रणनीतिक प्रतस्पर्धा का एक प्रमुख रंगमंच है।
- **चीन द्वारा सैन्यीकरण के प्रयास:** चीन हदि महासागर में भारत के हतियों और स्थिरता के लिये एक प्रमुख चुनौती रहा है।
 - भारत के पड़ोसी देशों को चीन से सैन्य और अवसंरचनागत सहायता मलि रही है, जिसमें म्यांमार को पनडुबबियाँ और श्रीलंका को युद्धपोत प्रदान करने के साथ ही जब्रिती ('हॉर्न ऑफ अफ्रीका') में एक वदिशी सैन्य अड्डे का नरिमाण करना शामिल है।
 - इसके अलावा, चीन का हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका) पर नरितरण है, जो भारतीय तट से महज कुछ सौ मील की दूरी पर है।
- **गैर-पारंपरिक मुद्दों के लिये हॉटस्पॉट:** इस क्षेत्र की वशिलता समुद्री डाका या पाइरेसी, तस्करी एवं आतंकवाद की घटनाओं सहित वभिन्न जोखिमों के आकलन और उनके समाधान को कठिन बनाती है।
 - हदि-प्रशांत क्षेत्र जलवायु परिवर्तन और तीन लगातार ला नीना परघटनाओं (जो चक्रवात और सूनामी उत्पन्न कर रहे हैं) के कारण भौगोलिक एवं पारस्थितिक स्थिरता से संबंधित गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।
 - इसके अलावा, अवैध, अनियमित और असूचित (illegal, unregulated and unreported- IUU) मत्स्यग्रहण और समुद्री

प्रदूषण इस क्षेत्र के जलीय जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

- **भारत की सीमिति नौसेना क्षमता:** भारतीय सैन्य बजट के सीमिति आवंटन के कारण भारतीय नौसेना के पास अपने पर्याप्तों को सुदृढ़ करने के लिये सीमिति संसाधन एवं क्षमता ही मौजूद है। इसके अलावा, वदिशी सैन्य ठकानों की कमी भारत के लिये हदि-प्रशांत में अपनी उपस्थिति बनाए रखने के मार्ग में एक बुनयादी सैन्य-सहाय्य संबंधी चुनौती उत्पन्न करती है।

भारत हदि-प्रशांत में अपनी उपस्थिति कैसे बढ़ा सकता है?

- **मुद्दा आधारति गठबंधन:** हदि-प्रशांत सहयोग एक भार-साझाकरण मॉडल (burden-sharing model) द्वारा रूपांकति कयि गए समन्वति और मुद्दा-आधारति भागीदारी के बना सफल नहीं हो सकता।
 - हाल ही में, तीन समुद्री देशों—फ्रांस, संयुक्त अरब अमीरात और भारत ने समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR), नीली अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय संपर्क, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा और लोगों के बीच परस्पर संबंध के लिये हदि-प्रशांत में एक त्रिपक्षीय प्रारूप को आकार दिया है।
- **समुद्र संबंधी जागरूकता:** भारतीय नौसैन्य परीरेक्ष्य से, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को प्रमुख परेक्षण बंदि के रूप में रखते हुए, खुफिया जानकारी एकत्र करने एवं नगिरानी करने के माध्यम से हदि महासागर क्षेत्र में वकिस के संबंध में व्यापक एवं अधिक वशि्वसनीय स्थतिजिन्य जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।
- **हदि-प्रशांत में बहुधुवीयता पर भारत का रुख:** वशि्व की 1/5 आबादी वाले देश और 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में भारत को अपना पक्ष चुनने, अपने हतितों पर वचिार करने और अपने अनुकूल वकिल्प चुनने या नरिणय लेने का अधिकार है, जहाँ ये वकिल्प नदिक और लेनदेन आधारति नहीं होंगे, बलका भारतीय मूल्यों एवं राष्ट्रीय हतितों के बीच के संतुलन को परलिकषति करेंगे।
 - भारत सभी तरह के संरेखण पर बल देता है, जैसे उसने कुरील द्वीप (रूस और जापान के बीच वविदति क्षेत्र) के नकिट आयोजति वोस्तोक सैन्य अभ्यास के केवल थल सैन्य घटक में भाग लिये और इसके नौसैन्य घटक से दूर रहा।
 - इसके साथ ही, भारत का 'सागर' वजिन (Security and Growth for all in the Region- SAGAR) हदि-प्रशांत में साझा चुनौतियों के लिये साझा प्रतिकरियाओं का एक टेम्पलेट है।
- **हदि-प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संलग्नता बढ़ाना:** भारत को स्वदेशी रक्षा उत्पादन बढ़ाने के साथ ही अपने रक्षा उपकरणों के नरियात को प्रोत्साहति करने की जरूरत है जो हदि-प्रशांत में चुनौतीपूर्ण सुरक्षा मुद्दों के साथ अधिक सक्रिय भारतीय संलग्नता के द्वार खोलेगा।
 - भारत अब ऑस्ट्रेलिया जैसे रणनीतिक साझेदारों के साथ व्यापार संबंधों को उदार बनाने की इच्छा रखता है, जबकि फिलीपींस को ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल प्रणाली की बकिरी के साथ हदि-प्रशांत से भारतीय संलग्नता को एक बड़ा बल प्राप्त हुआ है।
- **मुक्त, खुले और सुरक्षति हदि-प्रशांत की ओर:** समय की आवश्यकता यह है कि हदि-प्रशांत में आर्थिक सहयोग और सामूहिक वकिस को बढ़ावा देने पर बल दिया जाए, जहाँ आर्थिक एवं सामाजिक मोर्चे पर हतिधारक राष्ट्रों की सक्रिय भागीदारी हो और वे एक खुले, परस्पर संबंध, समृद्ध, सुरक्षति और प्रत्यास्थी हदि-प्रशांत पर लक्षति होने के साथ ही इस क्षेत्र के अधिक समावेशी एवं संवहनीय भवषिय को सुनिश्चति करें।

अभ्यास प्रश्न: हाल के वर्षों में वैश्विक भू-राजनीतिक शब्दावली में 'इंडो-पैसफिक' का एक प्रमुख शब्द के रूप में उभार हुआ है। वचिार कीजयि कि भारत इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का कसि प्रकार वसितार कर सकता है।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

????????????????

Q.भारत नमिनलखिति में से कसिका सदस्य है? (वर्ष 2015)

1. एशिया - प्रशांत महासागरीय आर्थिक सहयोग
2. दक्षिण - पूरवी एशियाई राष्ट्र संघ
3. पूरवी एशिया शखिर सम्मेलन

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (A) केवल 1 और 2
- (B) केवल 3
- (C) 1, 2 और 3
- (D) भारत इनमें से कसि का भी सदस्य नहीं है

उत्तर: (B)

????????????????

Q.1 भारत-रूस रक्षा सौदों के बदले भारत-अमेरिका रक्षा सौदों का क्या महत्त्व है? हदि-प्रशांत क्षेत्र में स्थरिता के संदर्भ में चर्चा कीजयि।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/towards-secure-indo-pacific>

